पूजांजलि सूची

क्रमांक	नाम	पृ० सं०
	पाठ	
१–	चतुर्विंशति जिन स्तोत्र	१
२–	अभिषेक पाठ	३
३–	अभिषेक स्तुति	३
४–	पूजा पीठिका	३
५–	मंगल विधान	४
६–	सस्वस्ति मंगल	५
	नित्यपूजन	
७–	देवशास्त्र गुरू	६
८–	पंच परमेष्ठी	१०
९–	विद्यमान बीस तीर्थंकर	१३
१०–	सीमंधर	१८
११–	कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय	२३
१२–	सिद्ध पूजन	२५
१३–	तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र	११६
	नैमित्तिक	
१४–	षोडशकारण	२९
१५–	पंचमेरू	३३
१६–	नंदीश्वर	३७
१७–	दशलक्षण	४२
१८–	रत्नत्रय	४८
	तीर्थंकर पूजाएं	
१९–	वर्त्तमान चौबीसी पूजन	५४
२०–	ऋषभदेव	५७
२१–	पदमप्रभु	६२
२२–	चंद्रप्रभु	६६
२३–	शीतलनाथ	७०
२४–	वासुपूज्य	७५
२५–	अनन्तनाथ	७९
२६–	शान्तिनाथ	८५
२७–	नेमिनाथ	८९
२८–	पार्श्वनाथ	९४
२९–	वर्धमान	९९
३ –	शान्तिकुन्थु अरनाथ	१०३
	विशेष पूजाएं	
३१–	बाहुबली पूजन	१०७
३२–	गौतमस्वामी	१११
३३–	जिनवाणी	१२०
३४–	समयसार	१२४
३५–	कुन्दकुन्दाचार्य	१२९
३६–	णमोकार मंत्र पूजन	१६७
३७–	भक्तामर पूजन	१७२
३८–	नवदेव	१७५
३९–	नित्यनियम	१७९
४०–	जिनेन्द्र पंचकल्याणक	१८२
४१–	त्रिकालचौवीसी	१८७
४२–	इन्द्रध्वज	१९१
४३–	समस्त सिद्ध क्षेत्र	१९६
	पर्व पूजाएं	
४४–	क्षमावणी	१३४
४५–	दीपावली	१४०
४६–	महावीर जयंती	१४६
४७–	अक्षयतृतीया	१५०
४८–	श्रुत पंचमी	१५४
४९–	वीरशासन जयंती	१५८
५०–	रक्षाबंधन	१६२
५१–	महा अर्घ	२०१
५२–	शान्तिपाठ	२०२
५३–	विसर्जन	२०३
५४–	भजन आदि	२०४ से २०८

प्रभु जी मैंने लाखों यतन करे

सम्यक दर्शन के बिन मैंने भव के भ्रमण करे ॥ प्रभु० ॥
तत्त्व चिन्तवन कबहुं न कीनो, शास्त्र हु श्रवण करे।
एक बार रुचि पूर्वक नाहीं, उर जिन वचन धरे ॥ प्रभु० ॥
कोटिक वर्षों तक प्रभु मैंने, तप भी गहन करे।
बिन त्रिगुप्ति के स्वामी, मैंने कर्म न हनन करे ॥ प्रभु० ॥
क्रिया काण्ड में धर्म मानकर, पर के भजन करे।
निजस्वरूप को कियो न चिन्तन, भवदुख सहन करे ॥ प्रभु० ॥

ज्ञान की निर्मल ज्योति जली

तत्त्व प्रतीति होत ही सगरी मिथ्या बुद्धि टली ॥ ज्ञान० ॥
अनतानुबंधी की माया में निज बुद्धि छली।
दृष्टि बदलते ही प्रभु मेरी दिशा आज बदली ॥ ज्ञान० ॥
निज परिणति रसपान करत ही मन की खिली कली।
मिथ्या भ्रांति मिटी क्षण भर में जो था सदा पलो ॥ ज्ञान० ॥

जो तू आत्म ध्यान चित धरतो

यह दुर्लभ मनुष्य भव तेरो, छिन में अरे सुधरतो ॥ जो० ॥
विषय कषाय कीच से बाहर, ले वैराग्य निकरतो।
आपा पर को भेद जानतो, सम्यक निर्णय करतो ॥ जो० ॥
पंच महाव्रत धारण करके, जो संयम आदरतो।
रत्नत्रय की नाव बैठकर, जल्दी पार उतरतो ॥ जो० ॥
ज्ञानपवन से अष्ट कर्म रज, नेक समय में हरतो।
सादि अनंत समाधि प्राप्त कर सुख अनंत तू भरतो ॥ जो० ॥

निज आतम सिंगार सबेरे

समकित मुकुट, ज्ञान को कुन्डल, कंगन चारित केरे। निज०।
संयम तिलक हार सामायिक, फिर निज रूप निहेरे।
निज दर्पण में निज को देखे, पर की ओर न हेरे। निज०।
निज को दर्शन निज को पूजन, निज को जाप जपेरे।
निज चिन्तन निज मनन मिटावत, जनम जनम के फेरे। निज०।